

न्यायालय सभागीय आयुक्त कोटा संभाग, कोटा

(निर्णय बड़जलारा राजेन्द्र सिंह शेखावत आई०ए०एस० सभागीय आयुक्त कोटा द्वारा आध्यापित)  
प्रकरण संख्या: 152/2025/अपील/एलआरएक्ट/कैप कोर्ट बून्दी  
दायरा दिनांक 04.04.2025  
अन्तर्गत धारा: 76 राज० भू राजस्व अधि०, 1956

उत्तवान

1. मोहनलाल आ० मन्ना जाति कुम्हार निवासी लक्ष्मीपुरा, तह० इन्द्रगढ़, जिला बून्दी
2. नन्दकिशोर आ० मन्ना जाति कुम्हार निवासी लक्ष्मीपुरा, तह० इन्द्रगढ़, जिला बून्दी
3. जगदीश आ० मन्ना जाति कुम्हार निवासी लक्ष्मीपुरा, तह० इन्द्रगढ़, जिला बून्दी
4. रामलाल आ० मन्ना जाति कुम्हार निवासी लक्ष्मीपुरा, तह० इन्द्रगढ़, जिला बून्दी
5. रामकुंवार आ० मन्ना जाति कुम्हार निवासी लक्ष्मीपुरा, तह० इन्द्रगढ़, जिला बून्दी
6. संतोष पुत्री मन्ना जाति कुम्हार निवासी लक्ष्मीपुरा, तह० इन्द्रगढ़, जिला बून्दी
7. भुली बेवा मन्ना जाति कुम्हार निवासी लक्ष्मीपुरा, तह० इन्द्रगढ़, जिला बून्दी

.....अपीलार्थीगण

बनाम

1. हरिश्चन्द्र आ० भीमराज जाति रेवारी निवासी रेवारपुरा
2. फूलचन्द आ० भीमराज जाति रेवारी निवासी रेवारपुरा
3. मांगीबाई पुत्री भीमराज जाति रेवारी निवासी रेवारपुरा
4. राजस्थान राज्य जरिये तहसीलदार, इन्द्रगढ़ तहसील इन्द्रगढ़ जिला बून्दी (राज०)

.....रेस्पोंडेंट्स

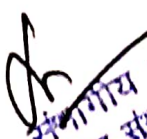
उपस्थित : श्री राजकुमार माथुर अभिभाषक – अपीलार्थीगण  
श्री रामकुमार दाधीच, अभिभाषक – रेस्पोंडेंट्स क्र. 1 से 3

::निर्णयः

दिनांक 28.05.2025


अपीलार्थी ने न्यायालय जिला कलक्टर, बून्दी (संक्षेप में अधीनस्थ न्यायालय) द्वारा प्रकरण संख्या 202/अपील/2017 बउत्तवान मोहनलाल वगैरह बनाम हरिश्चन्द्र वगैरह में पारित निर्णय दिनांक 16.08.2023 के विरुद्ध द्वितीय अपील राज० भू राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 76 अन्तर्गत इस न्यायालय में पेश की गई।

1. अपील प्रकरण के तथ्य संक्षेप में इस प्रकार हैं कि अपीलार्थी द्वारा अधीनस्थ न्यायालय के समक्ष नायब तहसीलदार लाखेशी द्वारा तस्दीक किये गये नामांतरकरण सं० 441 दिनांक

  
संभागीय आयुक्त  
कोटा संभाग, कोटा

18.10.2017 ग्राम लक्ष्मीपुरा से अप्रसन्न होकर भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 75 अन्तर्गत प्रथम अपील पेश की गई। अधीनस्थ न्यायालय के द्वारा अपीलाधीन नामांतरकरण को अपीलार्थी के द्वारा विधिविरुद्ध साबित करने में असफल रहना वर्णित करते हुए उक्त नामांतरकरण को विधिसम्मत मानते हुए अपील अपीलार्थी निर्णय दिनांक 16.08.2023 से खारिज की गई।


2. अधीनस्थ न्यायालय जिला कलक्टर, बून्दी द्वारा पारित निर्णय दिनांक 16.08.2023 से व्यथित होकर अपीलार्थी द्वारा भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 76 अन्तर्गत द्वितीय अपील पेश कर कथन किया कि कृषि भूमि खसरा न. 778 रकबा 0.7700 हेक्टेयर वाके ग्राम लक्ष्मीपुरा पटवार हल्का नोताड़ा तहसील इन्द्रगढ जिला बून्दी (राज.) में स्थित है। उक्त कृषि भूमि अपीलार्थी क्र.1 लगायत 5 के पिता एवं अपीलार्थी क्र. 7 के पति मन्ना को वर्ष 1976 में आवंटित हुई थी विवादित नामान्तरकरण से पूर्व उक्त भूमि अपीलार्थी के गैर खातेदारी में दर्ज थी और उक्त कृषि भूमि पर अपीलार्थी काबिज काश्त कृषि कार्य करते चले आ रहे थे। परन्तु उक्त भूमि का इन्तकाल संख्या 441 रेस्पोंडेन्ट क्रम 1 लगायत 3 के पक्ष में दिनांक 18.10.2017 से खोल दिया। जिसकी अपील अपीलार्थी द्वारा न्यायालय जिला कलक्टर, बून्दी के यहां प्रस्तुत की जिस पर निर्णय करते हुए जिला कलक्टर बून्दी द्वारा दिनांक 16.08.2023 को उक्त अपील खारिज फरमा दी गई। अधीनस्थ न्यायालय तहसीलदार बून्दी द्वारा खोला गया नामान्तरण सं. 441 दिनांक 18.10.2017 वस्तु स्थिति व विधान प्रक्रिया के सर्वथा विपरीत होने से निरस्त किये जाने योग्य है। उक्त भूमि के सम्बन्ध में अधीनस्थ न्यायालय को इस तथ्य की जानकारी थी कि वादग्रस्त भूमि अपीलार्थी क्र.1 लगायत 6 के पिता एवं अपीलार्थी क्र. 7 के पति मन्ना को वर्ष 1976 में आवंटित कर उनके गैर खातेदारी में दर्ज कर कब्जा मौके पर संभलाया गया तब से उक्त भूमि पर अपीलार्थी कृषि कार्य करता चला आ रहे हैं, परन्तु उक्त तथ्य की अनदेखी कर अधीनस्थ न्यायालय द्वारा नामांतरकरण खोला गया। इस प्रकार विवादित नामान्तरकरण विधि विरुद्ध होने से निरस्त किये जाने योग्य है। अधीनस्थ न्यायालय रेस्पोंडेन्ट क्रम 4 द्वारा उक्त विवादित इन्तकाल खोलेने से पूर्व अपीलार्थी को किसी प्रकार से कोई सूचना नहीं दी गई तथा न ही कोई नोटिस दिया गया। अधीनस्थ न्यायालय द्वारा मौके की स्थिति का अवलोकन किये बिना ही उक्त नामान्तरकरण तस्दीक किया है, जो सर्वथा विपरीत वस्तुस्थिति होने से खारिज फरमाये जाने योग्य है। अपीलार्थी उक्त भूमि पर करीब 40 वर्षों से निरन्तर कृषि काश्त करता चला आ रहा है, उक्त तथ्य को अनदेखा कर अधीनस्थ न्यायालय में उक्त तथ्य विवादित नामान्तरकरण तस्दीक किया है, जो विधि विरुद्ध होने से

  
संनामीय आयुक्त  
क्षेत्र प्रभाग, कोटा

निरस्त किये जाने योग्य है। अधीनस्थ न्यायालय द्वारा वास्तविक तथ्यों को छुपाकर रेस्पोंडेन्ट क्रम 1 लगायत 3 को लाभ पहुंचाने की नियत से उक्त विवादित नामान्तरकरण खोला है, जो निरस्त किये जाने योग्य है। अतः अपील अपीलार्थी स्वीकार फरमायी जाकर अपीलाधीन नामान्तरकरण संख्या 441 दिनांक 18.10.2017 ग्राम लक्ष्मीपुरा पटवार हल्का नोताडा, तहसील इन्द्रगढ़, जिला बून्दी को निरस्त किया जावे तथा रेस्पोंड क्र.1 लगायत 3 का नाम विलोपित कर अपीलार्थीगण का नाम पूर्व की भांति राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज फरमाया जावे।


3. अपील दर्ज रजिस्टर की जाकर रेस्पोंड को जरिये नोटिस/सम्मन तलब किया गया। अधीनस्थ न्यायालय का अभिलेख प्राप्त होने पर प्रकरण में बहस विद्वान अभिभाषक उभयपक्षकारान सुनी गई।

4. विद्वान अभिभाषक अपीलार्थी ने अपील में वर्णित तथ्यों को दोहराते हुये कथन किया कि प्रश्नगत प्रकरण में पूर्व में न्यायालय अतिरिक्त जिला कलक्टर सीलिंग बून्दी द्वारा प्रकरण संख्या 156 सीलिंग 2008 में पारित दिनांक 13.01.2009 को निर्णय पारित किया गया, जिसमें अपीलार्थी पक्षकार नहीं था। जिसकी सूरजमल पुत्र प्रताप एवं अर्जुन पुत्र प्रताप के द्वारा अपील माननीय राजस्व मण्डल राजस्थान अजमेर में प्रस्तुत की जाने पर अपील खारिज की गई। इस प्रकार अपीलार्थी उक्त दोनों न्यायालय में पक्षकार नहीं होने पर भी अधीनस्थ न्यायालय जिला कलक्टर, बून्दी द्वारा पारित निर्णय दिनांक 16.08.2023 में यह विवेचन किया गया कि प्रकरण में अपीलाधीन नामान्तरकरण मूल आदेश नहीं होकर अतिरिक्त जिला कलक्टर (सीलिंग), बून्दी का निर्णय मूल आदेश है। अपीलार्थी को मूल आदेश से आपत्ति होने से उनके द्वारा राजस्व मण्डल, राजस्थान अजमेर में अपील दायर कर अपने अधिकार का उपयोग किया जा चुका है। इस प्रकार उक्त कृषि भूमि अपीलार्थी क्र.1 लगायत 6 के पिता एवं अपीलार्थी क्र. 7 के पति मन्ना को वर्ष 1976 में आवंटित हुई थी विवादित नामान्तरकरण से पूर्व उक्त भूमि अपीलार्थी के गैर खातेदारी में दर्ज थी और उक्त कृषि भूमि पर अपीलार्थी का बिज काशत कृषि कार्य करते चले आ रहे थे। परन्तु उक्त भूमि का इन्तकाल संख्या 441 रेस्पोंडेन्ट क्रम 1 लगायत 3 के पक्ष में दिनांक 18.10.2017 से खोल दिया। अधीनस्थ न्यायालय रेस्पोंडेन्ट क्रम 4 द्वारा उक्त विवादित इन्तकाल खोलने से पूर्व अपीलार्थी को किसी प्रकार कोई सूचना नहीं दी गई तथा न ही कोई नोटिस दिया गया। अधीनस्थ न्यायालय द्वारा मौके की स्थिति का अवलोकन किये बिना ही उक्त नामान्तरकरण तस्दीक किया है। अपीलार्थी उक्त भूमि पर करीब 40 वर्षों से निरन्तर कृषि काशत करता चला आ रहा है, उक्त तथ्य को अनदेखा कर अधीनस्थ न्यायालय

  
 श्रीमती आशुक्ला  
 कोच संगम, कोटा


में उक्त तथ्य विवादित नामान्तरकरण तस्दीक किया है, जो विधि विरुद्ध होने से निरस्त किये जानें योग्य है। अतः अपील अपीलार्थी स्वीकार फरमायी जाकर अपीलाधीन नामान्तरकरण संख्या 441 दिनांक 18.10.2017 ग्राम लक्ष्मीपुरा पटवार हल्का नोताडा, तहसील इन्द्रगढ़, जिला बून्दी को निरस्त किया जावे तथा रेस्पो0 क्र.1 लगायत 3 का नाम विलोपित कर अपीलार्थी का नाम पूर्व की भांति राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज फरमाये जाने का अनुरोध किया गया।

5. विद्वान अभिभाषक रेस्पो0 ने अपने पक्ष के समर्थन में लिखित बहस पेश कर कथन किया कि अधीनस्थ न्यायालय जिला कलेक्टर बून्दी द्वारा अपने विवेचन में स्पष्ट किया है कि अपीलार्थी रेस्पोडेन्टगण के नाम दर्ज नामान्तरकरण संख्या 441 दिनांक 18.10.2017 को विधि विरुद्ध साबित करने में असफल रहे हैं। जिसके फलस्वरूप अपीलार्थी की अपील खारिज फरमायी गई है। अपीलाधीन नामान्तरकरण संख्या 441 दिनांक 18.10.2017 माननीय न्यायालय अतिरिक्त जिला कलेक्टर (सीलिंग) बून्दी के प्रकरण संख्या 156/2008 सरकार बनाम् अर्जुनराम वगैरे निर्णय दिनांक 13.01.2009 के तहत रेस्पोडेन्टगण के पूर्वज के विरुद्ध सीलिंग कार्यवाही के तहत 327 बीघा 15 बिस्वा भूमि में से 57 बीघा 15 बिस्वा भूमि सीलिंग सरप्लस घोषित किये जाने का निर्णय पारित किया गया है किन्तु पुराने सीलिंग कानून के तहत कुल भूमि में से 278 बीघा 06 बिस्वा भूमि सीलिंग में अधिग्रहण कर सिवायचक दर्ज की जा चुकी थी। माननीय न्यायालय द्वारा रेस्पोडेन्टगण के पूर्वजों का 4 यूनिट भूमि मानते हुए प्रत्येक को 67 बीघा 10 बिस्वा भूमि धारित किये जाने का अधिकारी मानते हुए 270 बीघा भूमि खातेदारी में दर्ज किये जाने का न्यायालय अतिरिक्त जिला कलेक्टर सीलिंग द्वारा अपने निर्णय में उल्लेखित किया है, जिसमें से 220 बीघा 11 बिस्वा भूमि रेस्पोडेन्टगण के पूर्वज प्रताप के पुत्र रामकिशन अर्जुन, सूरजभान, भीमराज (मृतक) के कायम मुकामान रेस्पोडेन्ट संख्या 1 लगायत 3 के खातेदारी में दर्ज किये जाने का आदेश दिनांक 04.07.2017 को अपने निर्णय में पारित किया गया है, उक्त निर्णय के आशय में तहसीलदार इन्द्रगढ़ द्वारा नामान्तरकरण संख्या 441 दिनांक 18.10.2017 रेस्पोडेन्टगण के पक्ष में खोला गया है। उक्त नामान्तरकरण न्यायालय अतिरिक्त जिला कलेक्टर सीलिंग बून्दी के विधिसम्मत निर्णय के अनुरूप रेस्पोडेन्टगण के पक्ष में खोला गया है जिसमें किसी प्रकार की कोई त्रुटि नहीं की गई है। अपीलार्थी द्वारा न्यायालय अतिरिक्त जिला कलेक्टर सीलिंग बून्दी के प्रकरण संख्या 156/सिलिंग/2008 सरकार बनाम् अर्जुनराम के निर्णय के विरुद्ध माननीय राजस्व मण्डल अजमेर में खारिज हो

  
सहायक जयपुर  
कोटा संभाग, कोटा

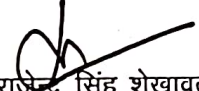
जाने के पश्चात किसी प्रकार से उक्त अपील के माध्यम से नामान्तरकरण संख्या 441 दिनांक 18.10.2017 के विरुद्ध अपील चलने योग्य नहीं है, क्योंकि अतिरिक्त जिला कलेक्टर, (सीलिंग) बून्दी को निर्णय अंतिम हो चुका है। यदि अपीलार्थी को आपत्ति हो तो माननीय राजस्व मण्डल के निर्णय के विरुद्ध माननीय उच्च न्यायालय में वाद प्रस्तुत किया जा सकता है। अतः अपील अपीलार्थी अस्वीकार की जाकर खारिज की जावे।

6. हमने अपील पत्रावली का अवलोकन कर वहस विद्वान अभिभाषक उभयपक्षकारान पर मनन किया। पत्रावली का अवलोकन करने से प्रकट होता है कि अपीलार्थी द्वारा अधीनस्थ न्यायालय के समक्ष नायब तहसीलदार लाखेरी द्वारा तस्दीक किये गये नामान्तरकरण सं० 441 दिनांक 18.10.2017 ग्राम लक्ष्मीपुरा से अप्रसन्न होकर भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 75 अन्तर्गत प्रथम अपील पेश की गई। अधीनस्थ न्यायालय के द्वारा अपीलार्थी द्वारा नामान्तरकरण को अपीलार्थी के द्वारा विधिविरुद्ध साबित करने में असफल रहना वर्णित करते हुए उक्त नामान्तरकरण को विधिसम्मत मानते हुए अपील अपीलार्थी निर्णय दिनांक 16.08.2023 से खारिज की गई। प्रश्नगत प्रकरण में अपीलार्थी का तर्क है कि न्यायालय अतिरिक्त जिला कलेक्टर सीलिंग बून्दी द्वारा प्रकरण संख्या 156 सीलिंग 2008 में पारित दिनांक 13.01.2009 को निर्णय पारित किया गया, जिसमें अपीलार्थी पक्षकार नहीं था। वादग्रस्त उक्त कृषि भूमि अपीलार्थी क्र.1 लगायत 6 के पिता एवं अपीलार्थी क्र. 7 के पति मन्ना को वर्ष 1976 में आवंटित हुई थी, विवादित नामान्तरकरण से पूर्व उक्त भूमि अपीलार्थी के गैर खातेदारी में दर्ज थी और उक्त कृषि भूमि पर अपीलार्थी का बिज काशत कृषि कार्य करते चले आ रहे थे। परन्तु उक्त भूमि का इन्तकाल संख्या 441 रेस्पोंडेन्ट क्रम 1 लगायत 3 के पक्ष में दिनांक 18.10.2017 से खोल दिया। अधीनस्थ न्यायालय रेस्पोंडेन्ट क्रम 4 द्वारा उक्त विवादित इन्तकाल खोलने से पूर्व अपीलार्थी को किसी प्रकार कोई सूचना नहीं दी गई तथा न ही कोई नोटिस दिया गया। अधीनस्थ न्यायालय द्वारा मौके की स्थिति का अवलोकन किये बिना ही उक्त नामान्तरकरण तस्दीक किया है। अपीलार्थी उक्त भूमि पर करीब 40 वर्षों से निरन्तर कृषि काशत करता चला आ रहा है, उक्त तथ्य को अनदेखा कर अधीनस्थ न्यायालय में उक्त तथ्य विवादित नामान्तरकरण तस्दीक किया है। इसके विपरित रेस्पोंड का तर्क रहा है कि प्रश्नगत उक्त नामान्तरकरण न्यायालय अतिरिक्त जिला कलेक्टर सीलिंग बून्दी के विधिसम्मत निर्णय के अनुरूप रेस्पोंडेन्टगण के पक्ष में खोला गया है जिसमें किसी प्रकार की कोई त्रुटि नहीं की गई है। अपीलार्थी द्वारा न्यायालय अतिरिक्त जिला कलेक्टर सीलिंग बून्दी के प्रकरण संख्या 156/सीलिंग/2008 सरकार बनाम अर्जुनराम के निर्णय के विरुद्ध माननीय राजस्व मण्डल

  
संमाननीय आधु. न.  
कोष संमान, कोष

अजमेर में खारिज हो जाने के पश्चात किसी प्रकार से उक्त अपील के माध्यम से नामान्तरकरण संख्या 441 दिनांक 18.10.2017 के विरुद्ध अपील चलने योग्य नहीं है, क्योंकि अतिरिक्त जिला कलक्टर, (सीलिंग) बून्दी को निर्णय अंतिम हो चुका है। यदि अपीलार्थी को आपत्ति हो तो माननीय राजस्व मण्डल के निर्णय के विरुद्ध माननीय उच्च न्यायालय में वाद प्रस्तुत किया जा सकता है। उपरोक्त विवेचनानुसार प्रकट होता है कि अधीनस्थ न्यायालय के निर्णय अनुसार अतिरिक्त जिला कलक्टर (सीलिंग), बून्दी के निर्णय दिनांक 01.06.2017 की पुष्टि माननीय राजस्व मण्डल द्वारा की जा चुकी है तथा यह निर्णय (अतिरिक्त जिला कलक्टर (सीलिंग), बून्दी का निर्णय दिनांक 01.06.2017) अंतिम निर्णय हो चुका है। अपीलाधीन नामान्तरकरण अतिरिक्त जिला कलक्टर, (सीलिंग) बून्दी के निर्णय दिनांक 01.06.2017 की पालना में खोला गया है। हम अधीनस्थ न्यायालय के निर्णय से पूर्णतया सहमत हैं कि यदि अपीलार्थी माननीय राजस्व मण्डल, राजस्थान अजमेर के उक्त निर्णय से व्यथित पक्षकार है, तो माननीय उच्च न्यायालय के समक्ष उक्त निर्णय के विरुद्ध चाराजोही करने हेतु स्वतंत्र हैं। चूंकि नामान्तरकरण संख्या 441 अतिरिक्त जिला कलक्टर (सीलिंग), बून्दी के आदेश दिनांक 01.06.2017 की पालना में खोला गया है तथा इस निर्णय की पुष्टि माननीय राजस्व मण्डल द्वारा की जा चुकी है। ऐसी स्थिति में हम अधीनस्थ न्यायालय जिला कलक्टर, बून्दी के निर्णय दिनांक 16.08.2023 में किसी प्रकार का विधिक एवं तथ्यात्मक दोष नहीं पाते हैं। लिहाजा अधीनस्थ न्यायालय का निर्णय न्यायोचित होने से किसी प्रकार के हस्तक्षेप की गुंजाइश नहीं है। परिणाम स्वरूप अपीलार्थी द्वारा प्रस्तुत अपील सारहीन/बलहीन होने से खारिज की जाती है।

7. निर्णय आज दिनांक 28.05.2025 को मेरे द्वारा टंकित कराया जाकर बाद हस्ताक्षर न्यायालय मुद्रा अंकित कर जारी किया गया।

  
(राजेंद्र सिंह शेखावत)  
समांगीय आग्रयुक्त  
कोटा संभाग, कोटा